मंडा पर्व का विश्लेषण

देवेंद्र साहू
असिस्टेंट प्रोफेसर एंव रिसर्च
स्कॉलर, नागपुरी विभाग,कार्तिक उराँव
महाविद्यालय गुमला

झारखंडी (नागपुरी) समाज में यह पर्व को सबसे कठिन पर्व माना जाता है। इस पर्व में कठिन व्रत भी किया जाता है। यह पर्व अक्षय तृतीया बैशाख से आरंभ हो जाता है। महादेव भोलेनाथ की पूजा, महादेव मंडा में कठिन व्रत उपवास, नियम धर्म का पालन करते हुए भगताओं द्वारा मनाया जाता है। इन भक्तों की प्रमुख को पाट भगता कहा जाता है। इन सभी भगताओं की सेवा के लिए मां, बहन, पत्नी, या बेटी में से कोई एक रहती है। इन्हें भी कठिन व्रत का पालन करना पड़ता है। इन्हें सोखताइन कहते हैं। जागरण की रात मेला भी लगता हैं। और मेले में बहुत दूर-दूर के लोग मेला देखने मेला स्थल पर पहुंचते हैं ।मेला में बहुत भीड़ होती है। मेला में कलाकार अपना कला दिखाते हैं। कहीं-कहीं में छऊ नृत्य का भी मनोहारी आयोजन किया जाता है। मंडा व्रत रखने वाले भगता कहीं-कहीं पर 100 से भी अधिक लोग होते हैं। भगताओं की तब बहुत ही कठिन होता हैं। भगताओं को रात्रि में धूप-धूवन की अग्नि शिखाओं के ऊपर उल्टा लटका कर झुलाया जाता हैं। इसे धुवाँसी भी कहा जाता है। इसके बाद भगताओं को दहकते अंगारों के कतार के ढ़ेर पर सभी लोग एक-एक कर नंगे पांव पर चलना होता हैं। दहकते अंगारों पर चलने को "फुलखुदी" कहा जाता हैं। दूसरे दिन चरक डाँग मचान पर भी चरखी में 15- 20 फीट ऊपर उन्हें हवा में झुलाया जाता हैं। भगता अपने फूलों की हार को लोगों के भीड़ की ओर फेंकते हैं। उन्हें पवित्र मानकर लोग अपने पास रख लेते हैं। भगताओं का दल रंग-बिरंगे पोशाकों में कंधे पर चाँवर, पैरों में घुँघरू, हाथों में बेद की छड़ी,सिर पर पगड़ी, मोर का पँख, गले में गुलइची फूलों की मोती माला में ये भगता दल बड़े ही सुशोभित होते हैं भगता का सामूहिक नृत्य मनोहरी होती हैं। इस नृत्य को देखने के लिए सभी लोग जाते हैं। यह मंडा पर महादेव पूजा का सबसे बड़ा त्यौहार है।

मंडा पर्व को आदिवासी सदान, दोनों समुदाय के लोग मनाते हैं। इस पर्व भगता आदिवासी- सदान सभी लोग बनते हैं। भगवान भोलेनाथ की लीला अपरमपार है। गर्मी के मौसम में इतना कठिन व्रत कहीं देखने को नहीं मिलता है। झारखंड प्रदेश की संस्कृति ही अलग हैं। झारखंड प्रदेश की पूरे विश्व में अपना अलग पहचान बनी हुई हैं। गर्मी के मौसम में भी उपवास करना, आग की धुआं में झुलना ,खंबे में उल्टा लटकना, आग के अंगारे में खाली पैर चलना, ये सब बहुत ही कठिन हो जाता हैं।परंतु भगताओं के लिए यह सरल हैं।इस पर्व में जो भी व्रतधारी होते हैं वे बड़ी सजकता पूर्व इस व्रत को पूरा करते हैं। यदि गलती हो जाता है तो कठोरतम सजा मिलती हैं और वह इस व्रत को पूरा नहीं कर पाते हैं। अतः जो भी भगता बनते हैं उन्हें पूरी लगन के साथ महादेव की उपासना करनी पड़ती हैं।मंडा पर्व शुरू होने के बाद पूरे नागपुरी भाषा क्षेत्र भक्तिमय हो जाता हैं। शिव उपासना में सभी लोग लीन हो जाते हैं। मंडा पर्व को भक्ति का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है।संजय कृष्ण के मतानुसार– " आग पर चलने की पर्व दुनिया की कई आदिम संस्कृतियों में है आस्था का एक ऐसा ही रंग,अंगारों के संग पूरे छोटानागपुरी में देखने को मिलता है। मंडप पर्व के रूप में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष से प्रारंभ होकर यह पर्व ज्येष्ठ मास तक मनाया जाता हैं। यह त्यौहार आग पर चलकर उपासना और साधना की सत्यता प्रमाणित करने के लिए आदिवासियों और सदानों द्वारा सम्मिलित रूप से मनाया जाता हैं।

अलग-अलग स्थानोंपर यह त्यौहार अलग-अलग तिथि में मनाया जाता है। शिव की इस उपासना में आदिवासी सदान का भेद मिट जाता हैं।

मजेदार बात तो यह हैं कि आदिवासियों का भी त्यौहार बली और इलि (चावल से बनी शराब) के बिना पूरा नहीं होता परंतु मंडा पर्व ही इनका ऐसा पर्व है जिसमें किसी प्रकार की बली नहीं चढ़ाई जाती हैं। इलि का अर्पण इसमें नहीं किया जाता है। बल्कि पूर्व रुपेण सात्विक रूप से इसे मनाया जाता है। इस त्यौहार में मुख्य उपासक जिन्हें पाट भगता एवं भगतिया कहा जाता है। के नेतृत्व में अन्य सह उपासक धधकती आग पर नंगे पैर चलते हैं। उस रात को जागरण और आग पर चलने की क्रिया को "फूलखुंदी" कहा जाता हैं।" (1)

मंडा पर्व के बारे में डॉ० गिरिधारी राम गंझू "गिरिराज" के अनुसार–

"पूरे झारखंड में बैसाख पक्ष अक्षय तृतीया के दिन से मंडा त्यौहार मनाया जाता हैं।मंडा का त्योहार महादेव मंडा में ही मनाया जाता है। और यह शिव की आराधना का कठिन व्रत धारण करने का व्रत पर्व है। जो शिव के आराधक इस मंडा पर्व में सम्मिलित होते हैं। उन्हें भगतिया (भगत) कहा जाता है। ये भगतिया उपवास, फलाहार, और अनेक जटिल क्रियाओं से होकर गुजरते हैं। जलते हुए हवन कुंड की लपेटों के ऊपर उलटे पाँव,ऊपर पैर, सिर नीचे कर धुवाँसी झूलते हैं। काँटी के बिछे पटरे पर शयन करते हैं। खुली सड़क पर लोटन (लुढ़कते) करते हैं। 10 -12 हाथ लंबे, दो हाथ चौड़े अंगारों के लहलहाते ढेर पर फूलखुंदी (अंगारों पर चलना) करते हैं। पीठ पर लोहे के हुक लगाकर 15-20 फीट ऊँचे चरक डांग (मचान की चरकी पर) झूलते हैं। और इनकी सेवा में हरेक भगतिया के लिए माँ, बहन,

जिसे सोखताइन कहते हैं।सोखताइन का तात्पर्य होता है भगतिया के सारे कष्टों को सोख लेने वाली। इनका भी वैसा ही कठिन व्रत, उपवास होता है जैसे भगतियों का। जिस रात फुलखूँदी तथा धुवाँसी होता है उस रात को जागरण की रात कहा जाता हैं। लोगों को धुवाँसी एवं फुलखूँदी की तैयारी जो लंबी चलती हैं। इस बीच मंडा स्थल पर छेऊ नृत्य का नाच की व्यापक व्यवस्था होती हैं।" (2)

मंडा पर्व को पूरे झारखंड प्रदेश में आस्थापूर्ण मनाया जाता हैं। झारखंड के हर गांव में महादेव मंडा रहता है। साथ ही देवी गुड़ी भी होता है। इसी शिव स्थल को झारखंड में शिवालय माना जाता हैं। देवी गुड़ी में माँ पार्वती का स्थल माना जाता है। इसे शिव के ही पूरक माना जाता है। शिव-पार्वती को आदिकाल से यहाँ के लोग पूजते आ रहे हैं। इसके बिना कोई गांव भी नहीं बसता हैं। सदान आदिवासी दोनों का इष्ट देव महादेव,आदिदेव, महादेव ही हैं।सदान महादेव कहते हैं। तो आदिवासी इन्हें सिंगबोंगा कहते हैं।

पुराणों में शिवपुराणों की विशेष महत्व है। पुराणों के अनुसार शिव संसार की संहारक माने जाते हैं। और संसार हेतु शिव तांडव नृत्य करते हैं। इसी से शिव को नृत्य का आदिदेव माना जाता है। साथ ही उनके डमरू से वाद्य संगीत का आरंभ होता हैं। इस तरह शिव संगीत के अर्थात वादन, नर्तन के अधिवाता देव माने जाते हैं। शिव की हर कथा में इनकी अलग ही महत्व है। शिव के बिना सब कुछ अधूरा रह जाता हैं।मानव समाज शिव की उपासना सदियों से करते आ रहे हैं। झारखंड में भी आदिकाल से कुछ ना कुछ रूप में शिव की आराधना की जाती हैं। शिव की महिमा झारखंड में कुछ अलग ही है। मंडा जैसी पर्व पूरी दुनिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलता हैं। सगुण भक्ति धारा की ये सबसे बड़ी प्रमाण है।ये पूरी तरह ईश्वरीय शक्ति को सिद्ध कर देता है। मंडा पर्व देखने के बाद सारी शंकाएँ मिट जाती है। और ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास होने लगती हैं। कोई भी नाश्तिक इसे इनकार नहीं कर पाता हैं। सारे तर्क, वितर्क इस पर्व पर मिट जाती है। सभी लोग भक्ति भावना में डूब जाते हैं। महादेव की उपासना में सदान आदिवासी लीन हो जाते हैं। दहकते अंगारों में नंगे पांव चलना, पर ये भक्तों को फूल में चलने जैसा प्रतीत होता हैं। और जलते भी नहीं। धुवाँसी करना, काँटी पर चलना,ये सब कठिन साधना होती हैं। ये पर्व सभी को आश्चर्यचकित कर देता है। शिव पर आस्था जाग जाती है। झारखंड का मंडा पर्व इसी महादेव की पूजा आराधना तब व कठिन साधना से जुड़ा हुआ हैं।जिसमें आराधना करने वाले भक्त जिसे यहां भगतिया कहा जाता हैं।10-11 दिनों तक कठिन व्रत रखते हैं। और आदि देव महादेव को प्रसन्न कर अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भगतिया (भक्तगण)।

मंडा एक प्राचीन पर्व हैंऔर मंडा पर्व का आरंभ कब, कहाँ, कैसे, क्यों, कौन किया ये प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलता है। पत्नी, बेटी या कोई एक महिला उनकी रात- दिन सेवा करती है।फिर भी प्रारंभिक रूप से इतिहास के और अज्ञात काल से यह मंडा पर्व सतत अविराम चलता आ रहा है। मंडा पर्व को पूरे सदान-आदिवासी बड़ी श्रद्धा, भक्ति, नियम, धर्म के साथ मनाते आ रहे हैं। मंडा पर्व झारखंड का सबसे बड़ा पवित्र और कठिन पूजा (व्रत) हैं।झारखंड का लंबे समय से चलने वाला लोक-उत्सव हैं। मंडा पर्व झारखंडी समरसत्ता का एक बड़ा त्यौहार हैं। डॉ० गंझू के मतानुसार पूजा विधि–

" सर्वप्रथम इच्छुक व्यक्ति जो मंडा पूजा में भाग लेना चाहता है। वह पास के महादेव मंडा के प्रधान पुजारी जिसे पाट भगता कहा जाता है। उसके पास जाता है। और मंडा का भगतिया बनने व प्रवेश करने की इच्छा जाहिर करता हैं। भगतिया पाँच वर्ष से अधिकतम उम्र तक चल फिर, संभल सकने की अवस्था तक के पुरुष भाग लेते हैं। वह अपने झोले में एक लोटा, गमछा, साड़ी, (धोती) आम के दतवन,आम पत्तों समेत टहनी, चाँवर,घुंघरू, वेंत की छड़ी,मोर पंख आदि पूजन सामग्री अवश्य रखता हैं।ऐसे भगतिया की सेवा के लिए उसकी पत्नी,बहन, बेटी, मां, दादी, नानी कोई एक महिला तैयार रहती है। इसे सोखताइन कहते हैं। जो भगतिया के कठिन साधना के कष्ट को सोख लेती है। इसी से इसे सोखताइन कहा गया हैं।

महादेव मंडा का प्रधान पाट भगता (प्रधान पुजारी) जब पूरी तरह इच्छुक को परख लेता है तब वैसे समस्त इच्छुक भगतिया गणों को नदी ले जाता है। वहाँ बिठाकर मंडा पर्व के महत्व, उसकी विधि-विधान वह निषेधों को विस्तार से बतलाता है। कठिन साधना, तप, उपवास, फलाहार, निर्जला, स्नान, पूजा, मंत्र, दिन, विधि आदि बतलाता हैं। सभी एक दूसरे को तीन-तीन बार प्रणाम करते हैं। आम का दतवन करते हैं। स्नान करते हैं। और वही नदी किनारे शांति से सादा भोजन फल, चना, आदि खाते हैं। कोलाहल बिल्कुल माना हैं।छीक आने, हिचकी होने, खांसी होने, सरकने,कंकड़ मिलने या किसी प्रकार की बाधा होने पर भोजन वे नहीं करते। मांस, मछली, मदिरा का सेवन पूर्णतया वर्जित होता है। नदी किनारे की बालू में ही वे विश्राम करते हैं। संध्या समय महादेव मांडा में माथा टेक कर घर लौटते हैं। सोखताइन उनकी हर विधि से ध्यान रखती है, सेवा करती है, दोनों ही जमीन पर शयन करते हैं। सोखताइन प्रतिदिन के लिए गुलइची फूलों का हार बनाती है उसके लिए खाने की व्यवस्था करती हैं। दूसरे दिन सभी भगतिया साड़ी की धोती पहनकर ऊपर सफेद गंजी, गुलइची फूलों की माला से तन ढके रहते हैं। कंधों पर दोनों ओर चाँवर बंधे होते हैं। पैरों में घुंघरू बंधा होता है। पगड़ी और ऊपर मोर पंख की कलगी की तरह खोसे रहते हैं। पाट भगता के साथ महादेव मंडा में माथा टेक कर भगतिया के साथ स्नान-ध्यान के उपरांत गांव- गांव, घर-घर घूम कर बच्चों को सामने बिठाकर अपने पैरों से आशीष देते हैं। ध्यान देने की बात है कि पाट भगता श्वेत धोती पहने रहता है उसके दाहिने- बाएँ नगाड़ची (नगाड़े बजाने वाला), ढाकँची (ढ़ाक बजाने वाला) तथा शहनाई वादक को प्रति घर से कुछ अनाज व पैसे मिलते हैं।

जो सभी भगतिया के काम आते हैं। यह प्रक्रिया 9 दिनों तक गाँव घर बदल-बदल कर होता है। भगतिया सभी पाट भगता के साथ एक मंत्र हमेशा बोलते रहते हैं। "जय जगन्नाथ काशी-विशी नाथ, गया गजा दो, बेनी महादेव, बले शिवा शिवा महे।" इसके मूल शब्द इसी तरह सुनाई पड़ते हैं।

पाट भगता महादेव मंडा से शिवलिंग को कंधे पर उठाकर आगे-आगे चलता है। उसके साथ नगड़ा ढ़ाँक तथा शहनाई बजाने वाले बजाते हुए चलते हैं। उनके पीछे सारे भगतियी मंत्र जाप करते चलते हैं। और शिव मंदिर के अतिरिक्त अन्य किसी मंदिर या देवी गुड़ी तक जाते हैं। और लौटते हैं। नौंवे दिन पूर्णतया उपवास एवं निर्जला रहकर सभी भगतिया एवं सोखताइन पूजा में सम्मिलित होते हैं। पाट भगता उनकी अगुवाई करता है। शौंच तथा लघुशंका के बाद हर बार स्नान करना अनिवार्य होता हैं। मिलकर दादल घाट स्नान करने जाते हैं। गोलाकार बैठकर एक दसरे को गुलइची फूल की माला पहनाते व तीन-तीन बार प्रणाम करते हैं। इस दिन गुलइची फूलों के साथ रजनी गंधा फूल की भी माला पहनते हैं। महादेव मंडा में जाकर सभी माथा टेकते हैं।

रात्रि में इधर महादेव मंडा स्थल के खुले भाग में लकड़ी का ढ़ेर लगाते हैं। उसे जलाकर आंगोर बनाते हैं।सूप से हाँक कर सारे राख उड़ा देते हैं। दसरी ओर एक झूलन में उलटे सिर लटका कर ऊपर पैर फंसा करे भगतिया गणों को झलाते हैं। नीचे गड्ढे में आग होती है।उस पर धूप-धूवन देकर प्रज्वलित करते हैं। और उसके ऊपर पहले पाट भगता फिर अन्य भगतिया लोगों को बारी -बारी से झूलाते हैं। कोई अगर चुपके से खाना खा लिया है या नियम भंग कर लिया है तो उस झूलन से जिसे धुवाँसी कहते हैं। अर्थात धूम्रपान कराना तो उसकी उल्टी हो जाती है। सोखताइन उसी स्थल पर गोलाकार खड़ी रहती है। काँसे लोटे में आम का टहनी पत्तों समेत सिर पर ढोकर धुवाँसी होने के बाद फुलखुँदी होती है दो बजे रात पाट भगता भगतिया लोगों के साथ एक घड़े को कंधे पर ढोकर बिना पीछे मुड़कर देखते हुए चुपचाप चला जाता हैं । दादुल घाट, तालाब या नदी। वहाँ कमर से ऊपर तक पानी में प्रवेश कर एक ही कजसाँस में डुबकी लगाकर स्नान और घड़ा भरने की काम करता हैं । बजाने वाला साथ बजाते हुए चलते हैं। सभी भगतिया साथ लौटते हैं। 10 से 15 फीट लंबे आग के ढेर पर से सर्वप्रथम पाट भगता अपनी अंजुली में आग उठाय महादेव मंडा में शिवलिंग पर चढ़ता हैं। और उस पर धूप-धुवन देता है। पूजा करने के बाद लंबे अग्नि ढ़ेर के चारों ओर भीगे हुए पुआल बिछा दिए जाते हैं। सभी भगतिया गोलाकार होकर खड़े हो जाते हैं। पुआल पर सोखताइन का वृत्त इनके बाहर -बाहर बना रहता हैं । वे भगतिया जनों पर आम पत्तियों की टहनी से जल का छिड़काव करती रहती है। भगतिया परिक्रमा करते रहते हैं। रात्रि का मध्य भाग पार हो गया रहता है। सर्वप्रथम पाट भगता हाथ जोड़े अग्नि में प्रवेश करता है। और पूरी लंबाई में इस तरह चलता है जैसे वह फूलों पर चल रहा हो। इसे फुलखुंदी कहते हैं। भगतिया लोगों की संख्या कहीं-कहीं 100-200 तक हो जाती है। उनके बाद सोखताइनें भी अग्नि पर चलती हैं।रात्रि काफी हो जाती है इसे जागरण की रात कहते हैं। लोगों को जागृत रखने के लिए मंडा स्थल पर ही फूलखुँदी के पूर्व एवं बाद भी छऊ नृत्य का या सांस्कृतिक गीत-संगीत का कार्यक्रम चलता रहता है।फुलखुँदी के समाप्ति के बाद महादेव मंडा परिसर में ही विश्राम करते हैं। भगतियागण सुबह घर जाते हैं। कभी-कभी सामान्य व्यक्ति तथा सोखताइन भी फूलखुँदी करते हैं। दसवें दिन चरक डांग (चरखी झूलन) झूलने का तथा मेले का दिन होता हैं।पाट भगता कांटी के सेज पर सोकर महादेव मंडा से झूलन स्थल तक आता हैं। इसे बैलगाड़ी या सगड़ में रखकर लीया जाता है। इस समय पाट भगता लोगों की भीड़ पर गुलइची फूलों को भीड़ पर लुटाता रहता है। इसे शुभ और पवित्र प्रसाद समझ कर लोग लोक लेते हैं। और साल भर अपने घरों में सुरक्षित रखते हैं। सभी भगतिया आकर्षक वेशभूषा में रहते हैं। चलने पर घुंघरू के कारण छम-छम से वातावरण मधुर हो जाता है। सर्वप्रथम झूलन मंच पर पाट भगता झूलता है। एक 15-20 फीट ऊंचाई पर एक ओर भगता लोगों को कपड़े से बांध दिया जाता है। छाती पर दूसरी ओर रस्सी से उसे एक परिक्रमा हवा कराया जाता हैं। उस समय वह कुलकुली लगता है तथा अपने झोलें से गुलइची फूलों को भीड़ में लुटाता रहता है। इसे भी पवित्र मानकर घरों में साल भर रखा जाता हैं। बारी-बारी से सभी भगतिया लोगों के झूलने के बाद उतरने वाले भगतिया को उनके भले स्वजन कंधे पैर बिठाकर घर ले जाते हैं। घर में खान-पान होता है।कहीं-कहीं धुवाँसी के दिन तथा कहीं-कहीं पर झूलन के दिन बकरे की बलि दी जाती है। जिसका प्रसाद स्वरूप एक-एक दोना प्रत्येक घर भिजवाया जाता हैं।

ग्यारहवाँ दिन मंडा छठी होता है। इसे गणेश की छठी भी कहा जाता हैं । 9-10 दिनों के कठिन व्रत के उपरांत दसवें दिन संगे-संबंधियों मेले में आए रहते हैं। उनका विशेष भोजन से सम्मान होता है। ग्यारहवाँ दिन मंड़ा छठी के उपरांत मंड़ा का त्योहार समाप्त हो जाता हैं। पाट भगता का चयन होता हैं। और कहीं-कहीं पारंपरिक भी पाट भगता होते हैं। ये पूरे मंडा के कार्यक्रमों का पूजा पाठ का सूत्रधार एवं अगुवा होते हैं।" (3) झारखंड के दक्षिणी छोटा नागपुर प्रमंडल में पूर्वी और दक्षिणी भाग में इस त्योहार को उमंग और उल्लास के साथ मनाया जाता हैं। झारखंड प्रदेश का यह एक अनोखा त्योहार है। इस पर्व में अंगारे भी फूल बन जाते हैं। यह श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, और अटूट सांस्कृतिक विरासत का त्योहार है। यह अक्षय तृतीया से जेठ पूर्णिमा तक चलता रहता है। मंडा पर्व एक ही दिन नहीं होता हैं। कहीं-कहीं पर अलग-अलग दिन में होता है। यह भी सरहुल की भांति घूमता हुआ त्योहार है। मंडा पर्व झारखंड प्रदेश का समरसत्ता का अप्रितम त्योहार है। ऐसा त्योहार अन्य जगहों पर देखने को नहीं मिलता हैं।

मंडा पर्व की कथा- मंडा पर्व की खास कथा प्रचलित नहीं है। करम, जितिया जैसी कथा इस पर्व में नहीं है। अन्य पर्वों में जो कथाएँ मिलती है। वह पैराणिक कथाओं से जुड़ी रहती हैं। जो मंडा पर्व में भी पौराणिक कथाओं में आग में कूदने की कथाएँ मिलती है। डॉक्टर गिरिधारी राम गौंझू के अनुसार इस

प्रकार है:--- " झारखंड पौराणिक भूभाग है। यहां नाग, असुर, सराक आदि के मध्य मुंडा सर्वप्रथम आ बसे। असुर तब लोहा गलाने और लोहे का औजार बनाने के लिए भट्टे पर भट्टे बड़ाते जा रहे थे। इसे पर्यावरण, जीव-जंतु, पेड़- पौधे प्रभावित होने लगे। धरती गर्म पर गर्म होती जा रही थी। असुरों को भट्टे बंद करने के लिए कहा गया। पर वे मानते ही न थे। असुर हर वर्ष नरबलि दिया करते थे। एक बार नरबलि के लिए एक खसरा युवक मिला। लोककथा बतलाती है कि खसरे युवक को अग्नि में डालने पर वह स्वर्ण बनकर जीवित निकल आया भट्टे से। फिर क्या था सोना पाने के व बनने के लोभ में असुर आग में कूद गए। आग में कूदने, चलने की प्रथम कथा यही मिलती हैं।

झारखंड नाग भूमि रही हैं। मुंडाओं के यहाँ आने पर इस झारखंड का नाम नागदिसुम (नागदेश) कहकर संबोधित किया। महादेव की प्रिय भूमि झारखंड रही है। इसी से इस राज्य में झारखंडी महादेव, बूढ़ा महादेव, बुचा महादेव, केतुगाँ महादेव, पाट महादेव, बनखंडी महादेव, टांगीनाथ महादेव, झारखंड में सर्वत्र बिरजमान है। महादेव मंडा तो प्राय देवी गुड़ी की तरह हर गांव में सर्वत्र अवस्थित है। महादेव असुरों तथा नागों जैसे अनार्य समुदाय के आदि देव हैं। इन्हें खुश करने के लिए असुर सदैव तप करते रहे हैं। कठिन साधना करते रहे हैं। महादेव भी प्रश्न होकर असुरों को वरदान देते रहे हैं। पौराणिक कथाएँ तो यही कहती है। झारखंड का मंड़ा पर्व इसी महादेव की पूजा आराधना तक वह कठिन साधना से जुड़ा हुआ है जिसमें आराधना करने वाले भक्त जिसे यहाँ भगतिया कहा जाता है। 10-11 दिनों तक कठिन व्रत रखते हैं।और आदि देव महादेव को प्रश्न कर अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भगतिया (भक्तगण) का मंडा एक प्राचीन पर्व हैं।"(4)
अभी तक इस पर्व को मनाते आ रहे हैं।

मंडा पर्व को कब, कहां, और कैसे, क्यों, कौन आरंभ किया यह अभी तक पूर्ण रूप से पता नहीं चल पाता हैं। इतिहास में अक्षांश काल से यह मंडा पर्व सतत अविराम चला आ रहा है। इस पर्व को झारखंड के जनसमुदाय आदिवासी- सदान आदिकाल से मनाते आ रहे हैं। सदान, उरांव, खड़िया, मुंडा, वह अन्य प्रजातियां भी बड़ी श्रद्धा, भक्ति, नियम, धर्म से मनाते आ रहे हैं। इससे प्रतीत होता है कि मंडा पर्व झारखंड का एक बड़ा कठिन पर्व है। और लंबे समय तक चलने वाला लोक- उत्सव है।और मंडा पर्व झारखंडी समरसता का एक अनोखा पर्व हैं। जो झारखंडी जनसमुदाय को एक सूत्र में बांधकर रखती हैं।यह झारखंडी एकता का परिचायक हैं।

मंडा पर्व की गीत- झारखंड के सभी पर्व त्योहार में गीत-संगीत के साथ उत्सव किया जाता हैं। मंडा पर्व में भी मंडा पर्व संबंधित मंत्र गीत कुछ इस प्रकार देखा जा सकता हैं। विद्योत्तमा निधि के अनुसार––

"जय जगन्नाथ, काशी विश्वनाथ
गया गजाधर वेणी महादेव
बले शिबा महे।" (5)

इस मंत्र गीत को भगतिया (भक्तगण) हमें व्रत आरंभ करने से लेकर अंत तक बोलते रहते हैं। सभी भक्त पूरे क्षेत्र को भक्तिमय कर देते हैं। पूरे समाज आस्था भक्ति में सरोवर हो जाते हैं। मंडा पर्व में शिव की महिमा का बखान किया जाता हैं।

भगतिया का नृत्य बड़ा ही उत्तेजक होता है। खूबसूरत और आकर्षक नित्य भी होता हैं। इसमें शिव की महिमा के गीत प्राय गाए जाते हैं जो इस प्रकार है–

"हाय रे हाय रे सोना शिव शंकर जटाधारी
पलके बिछालैं मनमारी भाई, शिव शंकर जटाधारी।।१।।
एक हाथे डमरू एक हाथे त्रिशूल,
शिव शंकर जटाधारी पलके बिछालैं मनमारी,
शिव शंकर जटाधारी।।२।।
शिवजी के छाईं करे महादेवपार्वती
शिव शंकर जटाधारी पलके बिछालैं मनमारी,
शिव शंकर जटाधारी।।३।।" (6)

इस गीत में नागपुरी समाज पूरा शिव भक्ति में सराबोर हो जाता हैं। डॉक्टर विद्योतमा निधि नागपुरी लोकगीत, नृत्य, और वाद्य में शिव के आकार-प्रकार, रूप-रंग, शील स्वभाव, गणेश पार्वती का बहुत ही अच्छा चित्रण हुआ हैं। शिव भक्त शिव की महिमा का गुणगान करते हैं। जो पूरे झारखंड भक्तिमय और संगीतमय हो जाता हैं। इस प्रकार की एक और गीत देखा जा सकता है–

"ठिमिर ठिमिर बजना बाजे शिवजी चललैं बारात,
शिवजी चललैं बारात गउरी बियाहें बसाहा बरद असवार।।१।।
मुड़े लेले शिव जाटा हो जोगी काँधे बाघ केरा छाल
गँले लेलैं शिव नाग माला चललैं गउरी बियाहें।।२।।
परिछे जे बाहरे भेलैं सासु मंधयिनी नाग छोड़लैं फुफकारे
अंग के वस्त्र सासु उधनी-बधनी गेल
लागी गेल शिव के ढीठ।।३।।
धीये लागिन उगब, धीये लागिन डुबब,
धीये लागिन खिलमु पताल
अइसन बैराहा बर संगें धीया ना
बिहावब भले गउँरारहतैं कुँवार।।५।।" (7)

शिव की महिमा का गुणगान करना ही भक्ति का संकेत हैं। भक्तगण हमेशा शिव की भजनगीत गाते रहते हैं। शिव की आराधना में शिव,पार्वती, गणेश का अधिक वर्णन होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव के जाटा से गंगा की उत्पत्ति का भी वर्णन मिलती है। और शिवजी माता गउरी से शादी के लिए बारात जाते हैं। और बारात में बैल पर बैठ कर गउरा के घर पहुँचते हैं।गउरा की मां शिव को परिछने जाती है। तब शिव जी को देखकर वह डर जाती है। शिवजी के गले में नाग सांप का माला, मुड में जाटा, काँध और कमर में बाघ के छाल ये सब को देखकर शिव के सास डर जाती हैं। वह भाग कर घर जाती है। और करती है कि मेरी गउरा घर पर कुंवार रहेगी पर ऐसी बर से विवाह नहीं होगी।

इस तरह से मार्मिक गीतों के माध्यम से शिवभक्त शिव की मंड़ा पर्व आराधना करते हैं। और शिव की महिमा का गुणगान करते हैं।

निष्कर्ष :-

झारखंड के पर्व त्योहारों में मंडा पर्व की एक अलग ही पहचान है। इस पर्व में सभी तरह के भेदभाव मिट जाते हैं। इंसान सिर्फ शिव भक्ति में लीन हो जाते हैं। आदिदेव महादेव सभी लोगों का इष्ट देव हो जाते हैं। मंडा पर्व झारखंडी एकता समरसता का सूचक है। प्रेम उत्सव उमंग उल्लास से मानव मन भर जाता है। इसी तरह मानव समाज में आपसी प्रेम सदा बनाए रखने के लिए जीवन में इस तरह का पर्व त्यौहार होना आवश्यक है।

****

संदर्भ:-

1. कृष्ण, संजय : झारखंड के पर्व त्यौहार मेले और पर्यटन स्थल, पृष्ठ संख्या 195, प्रभात प्रकाशन दिल्ली। वर्ष -2017.
2. गौंझू , डॉ०. गिरधारी राम : झारखंड के लोक संगीत, पृष्ठ संख्या 159, झारखंड झरोखा रांची।वर्ष-2015.
3. गौंझू, डॉ० गिरधारी राम : ऋतु के रंग मांदर के संग, पृष्ठ संख्या 71/72 , प्रिय साहित्य सदन दिल्ली।वर्दिल्ली।वर्ष-2018.
4. गौंझू ,डॉ० गिरधारी राम : ऋतु के रंग मांदर के संग, पृष्ठ संख्या 69/70, प्रिय साहित्य सदन दिल्ली।वर्ष-2018.
5. निधि, डॉ विद्योतमा : नागपुरी लोकगीत नृत्य एवं वाद्य, पृष्ठ संख्या 216, पृथ्वी प्रकाशन दिल्ली।,वर्ष -2020.
6. उपर्युक्त , पृष्ठ संख्या 216.
7. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 217.

सेक्स, जेंडर एवं लैंगिकता के आधार पर क्वीर का एक संक्षिप्त अध्ययन

सलीजा ए पी
सहायक प्राध्यापक –हिंदी
शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय कोझीकोड- केरल

क्वीर एक अवारित शब्द (umbrella word) है, जो ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करता है जो विषमलैंगिक नहीं हैं, और जिनके जेंडर समाज के कायदे के अनुकूल नहीं है । 'क्वीर' शब्द ने LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए एक सामान्य और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके के रूप में अपने और अपने समुदाय को संदर्भित किया है।

हर कोई, अपने आप को 'लिंग' (sex) के ज़रिये ही परिभाषित करता हैं, लेकिन यह परिभाषा आम तौर पर समाज द्वारा पूर्व निर्धारकों से होती है। समाज ने कायदे-कानून बना रखे है कि कोई विशिष्ट लिंग में जन्मे हो तो विशिष्ट रूप से पेश आना चाहिए, तुम्हारा मन जो भी कहे वह महत्व नहीं रखता। असल में जेंडर हमारा लिंग (जननांग) के आधार पर नहीं है, वह हमारी सोच के आधार पर है। दिमाग जो कहता है, वही हमारा जेंडर है I हम जिस ओर आकर्षित होते है वह ही हमारी लैंगिकता है। इसका मतलब यही है कि सेक्स व लिंग जन्म से मनुष्य के साथ है (लेकिन उसकी पहचान बाद में अलग हो सकता है) I ऐसा भी हो सकता है कि किसी को जन्म के अवसर पर लिंग ही ना हो, और जो है वह सिर्फ नाम मात्र हो या जो है उसका उसके मन और दिमाग से कोई सम्बन्ध नहीं रखता हो। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति, पुरुष का जननांग लेकर जन्म लेता है तो उसका सेक्स पुरुष का हुआ, लेकिन इस से यह निर्धारित नहीं किया जाता कि उसका जेंडर पुरुष का है, उसका जेंडर स्त्री का भी हो सकता है, वैसे ही जेंडर स्त्री का होने से यह भी पक्का नहीं कि उसका लैंगिक आकर्षण पुरुष से हो, वह स्त्री से भी हो सकता है, या दोनों से भी हो सकता है, उसी तरह विपरीत रूप में भी। समझने में कठिनाई है मगर यही सच्चाई है।

क्वीर का अपना एक स्वत्व है । विशेष अधिकार व सुविधा (प्रिविलेज) के साथ जीने वाले लोग, जिस समाज का निर्माण करते हैं, उस समाज में कुछ लोगों को जानबूझकर बाहर रखते है। सामान्यतः लैंगिक अल्पसंख्यकों को LGBTQIA+ के नाम से पहचाना जाता हैं और क्वीर शब्द को अवारित या छाता शब्द के रूप में इस्तेमाल करते हैं। क्वीर शब्द के अंतर्गत वे सभी लोग आते हैं जो विषम लैंगिक (Hetro Sexual) व सिस जेंडर नहीं है, अर्थात जिसकी जेंडर स्त्री व पुरुष का नहीं है या जिसकी लैंगिकता समाज के कायदे के अनुकूल नहीं है, जिसको समाज विचित्र कहता आया है, और उनको उसी अर्थ में 'क्वीर' नाम प्राप्त हुआ। दरअसल, क्वीर के अंतर्गत सिर्फ ट्रांसजेंडर या समलैंगिक ही नहीं है बल्कि इसमें कई तरह की विभिन्नताओं के साथ, अनेक विभाग है। जेंडर और लैंगिकता में शारीरिक व मानसिक रूप से अलगाव रखने वाले सभी इस विभाग में आते हैं।

एक समलैंगिक व्यक्ति को प्रेम करने का और एक अलैंगिक व्यक्ति को प्रेम न करने का पूर्ण अधिकार है, उस अधिकार के लिए क्वीर समाज एक कंठ से आग्रह करता है I यह भी क्वीर सिद्धांत का मुख्य दायित्व है। क्वीर और उसके अर्थ को बेहतरीन तरीके से समझने के लिए पहले **लिंग, जेंडर और लैंगिकता** नामक तीन शब्दों